www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नवयुग के सन्देश-वाहक पवित्रात्मा बहा

इस जमाने में अगर कोई व्यक्ति धन-जन, वैभव, सत्ता, पदवी आदि से भरपूर होने पर भी स्वेच्छा से सबको त्यागकर गरीबी को अपनाले, परिचारकों से सेवा-सुश्रूषा कराना छोड़कर स्वयं समाज के उपेक्षित दीन-दुखियों की सेवा करने लगे, ऊँचे हकूमत के ओहदे को लात मारकर सरकारी कर्मचारियों के दुर्व्यवहार और कारावास आदि के कष्टों को सहन करने लगे, तो ज्यादातर लोग उसे सनकी या नासमझ ही मानने लगेंगे। वे यह कहेंगे कि–"बैठे ठाले अपनी मर्जी से सङ्कट विपत्ति, बर्बादी, बुलाना कहाँ की बुद्धिमत्ता है ? हम किसी के साथ अन्याय न करें, कष्ट न पहुँचावें, अवसर पड़ने पर यथासम्भव सहायता भी करदें, इतना तो उचित है । इस प्रकार के आचरण को प्रशंसनीय माना जायगा। पर जान बूझकर, बिना किसी के लाभ की आशा के, आपत्तियों में कूदना तो एक बहुत बड़ी गलती है।"

पर इन बुद्धिमान् सलाहकारों के होते हुए भी संसार में ऐसे लोग निकल ही आते हैं, जो पूर्ण सुख सुविधा के जीवन को त्याग कर कठिनाई और सङ्कटों के मार्ग को अपनाते हैं और उसी में अपने जीवन की सफलता मानते हैं। वैसे तो थोड़े-बहुत अंशों में ऐसे आत्मदर्शी और समभावी सज्जन हमेशा ही होते रहते हैं, क्योंकि उनका सर्वथा अभाव हो जाय तो मानव-समाज का अस्तित्व ही संदिग्ध हो जाय। पर कभी-कभी दैवी विधान के अनुकूल इस क्षेत्र में इतनी महान् और त्याग, तपस्या, परमार्थ का चरम आदर्श उपस्थित करने वाली आत्माओं का प्राकट्य होता है जिनके द्वारा एक तरह से संसार की कायापलट ही हो जाती है और मानवता को एक नये युग का मार्ग दर्शन

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राप्त होता है। ऐसे राजकीय वैभव को त्याग कर जगदुद्धार के महान् उद्देश्य मे अपने को पूरी तरह खपा देने वाले महामानवों में हम बुद्ध, भगीरथ, महावीर, अशोक, टाल्सटाय, क्रोपाटकिन आदि का नाम ले सकते हैं। म० बहा की गिनती भी दैवी विभूति की इसी सर्वोच्च श्रेणी में की जानी चाहिये, क्योंकि उन्होंने केवल सत्य की खातिर ४० वर्ष तक कारागार में बन्द रहकर धर्म विरोधी राक्षसी प्रकृति के व्यक्तियों द्वारा घोर यंत्रणायें सहकर मानवता की आदर्श सेवा की और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श के जीवित उदाहरण बनकर संसार के कोने-कोने में इसका प्रचार किया। किसी महा संकटकाल में जो दैवी विभूतियाँ संसार के शोक-सन्तापों को अपने ऊपर लेकर क्रियात्मक रूप से मनुष्यों के उद्धार का मार्ग प्रदर्शित करती हैं, वे चाहे दुनिया के किसी कोने में रहने वाली और किसी भी जाति या वंश में उत्पन्न हुई हों, उनको गीता के कथनानुसार भगवान् की विशिष्ट शक्ति ही मानना चाहिये। ऐसी ही महान् आत्माओं के लिये भगवान् कृष्ण ने घोषणा की है—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

"संसार में जब कभी अधर्म की वृद्धि होती है और धर्म का पतन होने लगता है उसी अवसर पर भगवान् किसी रूप में प्रकट होकर उस दुरवस्था का सुधार करते हैं।"

यह विचार करना कि भगवान् का अवतार केवल भारतवर्ष में और वह भी किसी सनातन धर्मानुयायी के घर में ही हो सकता है भगवान् को एक देशव्यापी और महासङ्कीर्णतावादी बना देना है। क्या अन्य देशों के निवासी भगवान् द्वारा उत्पन्न नहीं किये गये हैं? और क्या वे नहीं चाहते कि अन्य देशों के निवासी भी अध्यात्म मार्ग में अग्रसर होकर आत्म-दर्शन करें? 'अवतार' 'मसीह' 'पैगम्बर' 'ईश्वरीय दूत' 'नवी' आदि अनेक शब्द विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों में एक ही भाव को प्रदर्शित करने के लिये प्रयोग में लाये जाते हैं। हमारे पुराणों में जगह-जगह 'पूर्णावतार' 'अंशावतार' 'युगा-

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


वतार आदि का जो उल्लेख मिलता है, वह इसी दृष्टिकोण से किया गया है। 'गीता' के दशवें अध्याय में 'तो भगवान् ने एक श्लोक में ही इस समस्या को हल कर दिया है—

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्व मम तेजोंऽश संभवम् ॥४१

अर्थात्—हे अर्जुन! "संसार में जो कुछ विभूतियुक्त (ऐश्वर्ययुक्त) कांतियुक्त और शक्तियुक्त वस्तु है, उसको तू मेरे ही तेज के अंश से उत्पन्न हुआ जान।"

तात्पर्य यही है कि भगवान् का लक्ष्य केवल किसी एक देश या विशेष जाति के लोगों को ही आत्मोत्थान (स्वर्ग, मुक्ति आदि) का अधिकारी बनाना नहीं है, वरन् जब मनुष्य-मात्र उन्हीं से उत्पन्न होते हैं तो निश्चय ही वे सबका उद्धार करके उनको सर्वोच्च गति तक पहुँचाना चाहेंगे। इसलिये वे विभिन्न देशों और जातियों में वहाँ के समाज, सभ्यता, संस्कृति के अनुरूप अवतार लेते हैं और लोगों को आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति करने की शिक्षा देते हैं। इसलिए हमको किसी भी सच्चे सन्त, महात्मा की अवज्ञा नहीं करनी चाहिये चाहे वह किसी भी देश, जाति, धर्म, सम्प्रदाय का क्यों न हो। न्यायकारी भगवान् की दृष्टि में सभी उत्तम कर्म करने वाले, मनुष्य मात्र की सेवामें अपने को अर्पित करने वाले, इसके लिये हर प्रकार के कष्टों को सहन करने वाले ही सच्चे भक्त माने जाते हैं और उन्हीं को प्रभु का सान्निध्य प्राप्त होता है।

आरम्भिक जीवन

बहाई समाज के संस्थापक पवित्रात्मा बहा, (भाः) (जन्म १२ नवम्बर १८१७) एक अत्यन्त प्राचीन प्रतिष्ठित वंश में हुआ था। उनके पूर्वज किसी समय पारसी थे, पर अरब आक्रमणकारियों ने जब ईरान पर अधिकार कर लिया तो उनको जबर्दस्ती इस्लाम धर्म में दीक्षित कर लिया गया। उनका घराना धन-जन से भरा पूरा था। उनके पितामह ईरान के बड़े बजीर थे और पिता मंत्री के पद पर कार्य करते थे। माता-पिता का प्रेम, परिवार वालों का

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्नेह, रङ्ग-रूप, प्रतिभा, विद्या सभी कुछ उनको पूरी मात्रा में प्राप्त हुआ था। उनका विवाह अपने देश के एक बड़े सरदार की पुत्री से हुआ था और उनकी पत्नी अपूर्व सुन्दरी और पतिव्रता थी। उनका आरम्भिक पच्चीस वर्ष तक का समय भी अपने घर में बड़े आदमियों के रहन-सहन के अनुसार व्यतीत हुआ था। पर उस समय भी उनकी स्वाभाविक उदारता और परोपकार की भावना बराबर प्रकट होती रहती थी। किसी भी याचक को विमुख नहीं लौटाते थे। उनका द्वार सदैव अतिथियों के लिये खुला रहता था और इसलिये मेहमानों की भीड़ हमेशा बनी ही रहती थी। उनके परिवार के मित्र और शुभचिन्तक उनको समझाते थे कि "इस तरह धन को लुटाकर तुम स्वयम् एक दिन इसी तरह कङ्गाल बन जाओगे। इसलिये अपनी सम्पत्ति को समझबूझकर खर्च करो।" किन्तु महात्मा बहा पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। उनके पिता का देहान्त हो जाने पर राज्य की प्रथा के अनुसार उनको अपने पिता का पद दिये जाने का प्रस्ताव किया गया तो उसको भी उन्होंने अस्वीकार कर दिया। यह देखकर अनजान लोग तो उनकी गलती बतलाने लगे पर समझदारों ने कहा—"यह व्यक्ति दूसरे लोक का है। इसके जीवन का कोई महान् उद्देश्य है, जो आज तो साफ-साफ प्रकट नहीं हो रहा है पर एक दिन यह दुनियाभर को स्पष्ट दिखाई देने लगेगा।"

महात्मा बाब से सम्पर्क

इस अवसर पर ईरान में एक महान् आत्मा का प्रादुर्भाव हुआ। उस समय वहाँ की परिस्थितियाँ बहुत दूषित हो गई थीं। राजकीय भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया था वहाँ के शाह ऐश आराम में मस्त रहते थे और प्रजा की बुराई-भलाई पर जरा भी ध्यान न देकर अपनी रङ्गरेलियों में पानी की तरह रुपया बहाते थे। वे अपने चाहे जिस सरदार, मंत्री या देश के प्रमुख व्यक्ति के नाम आज्ञापत्र भेज देते थे। कि अमुक दिन तक इतना रुपया सरकारी खजाने में जमा कर दो। जो ऐसा न करता उसे राजाज्ञा का उल्लङ्घनकारी और विद्रोही समझा जाता और फिर उसका घरबार ही नहीं लूट लिया जाता वरन् घर के

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोगों को भी बिना किसी प्रकार के मुकदमे के जेल में ठूँस दिया जाता। मं० बहा के पिता से भी दो बार इसी तरह बड़ी-बड़ी रकमें वसूल की गई थीं। तीसरी बार जब उनकी शक्ति से बाहर धन-राशि माँगी गई, तो वे बड़ी आपत्ति में फँस गये, जिससे अत्यन्त कठिनाई से उद्धार हो सका। यह स्पष्ट था कि जब राजा की यह दशा थी तो उसके कर्मचारी कहाँ ईमानदार रह सकते थे, वे भी खुले तौर पर प्रजा का शोषण करते थे जिससे सर्वसाधारण की दशा बड़ी ही कष्टपूर्ण हो गई थी।

एक तरफ राज-तन्त्र इस प्रकार अन्याय-युक्त बन गया था, तो दूसरी ओर धर्म-तन्त्र भी भ्रष्ट हो चुका था। मुल्ला, मौलवी, इस्लाम की भ्रातृभाव युक्त शिक्षाओं का प्रचार करने के बजाय कट्टरता और अन्धविश्वासों को बढ़ावा दे रहे थे और उन्हीं के बल पर निकम्मे रहकर भी आराम का जीवन बिता रहे थे। समाज और धर्म की यह दुर्दशा कुछ सच्ची आत्माओं को चुभने लगी और उनमें से सैयद अली मुहम्मद, जो इस्लाम के पैगम्बर मुहम्मद साहब के वंश में से थे, इसके विरुद्ध खड़े हुए और सन् १८४४ में उन्होंने एक मानवतावादी समाज की स्थापना की "कि वर्तमान अन्यायपूर्ण दुर्दशा को मिटाना ही उनका जीवनोद्देश्य है, भगवान् ने उनको इसी कार्य के लिये पृथ्वी पर भेजा है।" यद्यपि मुसलमानी शासन में इस प्रकार का दावा करना बड़ा खतरनाक था, पर सैयद अली मुहम्मद ने जो उस समय केवल २५ वर्ष के युवक ही थे, किसी महान् दैवी प्रेरणा से यह निश्चय कर डाला और 'बाब' नाम धारण करके अपने अनुयायिओं में इसकी घोषणा करदी तथा तदनुसार कार्यारम्भ कर दिया। उन्होंने अपने १८ 'शिष्यों' को ईरान व तुर्किस्तान के विभिन्न भागों में इस घोषणा को फैलाने के लिये भेजा और खुद मक्का की यात्रा को चले। वहाँ उन्होंने संसार भर के मुसलमानों के सामने जो 'हज' करने आये थे अपने कर्तव्य और कार्यक्रम की स्पष्ट शब्दों में घोषणा करदी। इससे समस्त ईरान में बड़ी उत्तेजना फैल गई। एक तरफ तो मानवतावादी, नवयुग लाने वाले सिद्धान्तों के श्रद्धालु उनके अनुयायी बनते जाते थे और दूसरी तरफ कट्टरपंथी लोग ईरान के शासक को उकसाने लगे कि वह इस नवीन विचार धारा को तुरन्त दबा दे। फलस्वरूप

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ ही दिनों में 'बाब' को कैद कर दिया गया और छः वर्ष तक उनको कारागार तथा कठोर व्यवहार, आदि की अनेक यातनाएँ दी गईं। अन्त में ९ जुलाई १८५० को उन्हें एक सार्वजनिक स्थान में गोलियों से उड़ा दिया गया।

पवित्रात्मा बहा का आत्म-त्याग

'बाब' की प्रथम घोषणा को सुनते ही म० बहा उनके अनुयायी बन गये थे और इन छः वर्षों में अपनी पूरी शक्ति से इस नवयुग लाने वाली दैवी योजना की पूर्ति में संलग्न थे। उनकी स्थिति वहाँ के समाज में बहुत ऊँची थी और आर्थिक साधन भी बढ़े-चढ़े थे इससे वे इस आपत्ति काल में हजारों 'बाबियों' की सहायता और रक्षा कर सके। उनको इस कार्य में धर्मान्ध लोगों और सरकारी कर्मचारियों का घोर विरोध और दुर्व्यवहार सहन करना पडा। अदालत में बाबियों की पैरवी करते हुए उनको भी दो बार जेलखाने में भेज दिया गया।

सन् १८५० में जब 'बाब' को मृत्युदण्ड दिये जाने पर उनकी वसीयत के अनुसार म० बहा को बाबीसमाज का प्रमुख नेता बना दिया गया तो उनका उत्तरदायित्व और भी बढ़ गया और कदम-कदम पर प्राण-सङ्कट भी जान पड़ने लगा। क्योंकि उस समय सरकारी नीति के कारण 'बाबियों' के प्राणों का कोई मूल्य नहीं था। उनके विरोधी उनको चाहे जैसे मारते-काटते, लूटते सरकारी कर्मचारियों को इसकी कुछ भी पर्वाह न थी। उल्टा समय-समय पर वे इसके लिये दुष्ट अत्याचारियों को उकसाते भी थे, क्योंकि वे चाहते थे कि किसी प्रकार इस समाज का मूलोच्छेद हो जाय। कुछ योरोपियन लेखकों के लेखों से हमको विदित होता है कि उस समय बाबी-समाज को एक दृष्टि से राजविद्रोही करार दे दिया गया था इसलिए कैसे भी अत्याचार करके उसे विनष्ट कर देने के लिये सरकार और उसके पक्षपातियों ने कमर कसली थी। दूसरी तरफ मुल्ला उनकी धार्मिक-स्वतन्त्रता को देखकर जल रहे थे, इस प्रकार दो पाटों के बीच में बाबी अत्यन्त क्रूरता के साथ पीसे जा रहे थे।

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



अत्याचार की पराकाष्ठा

सन् १८५२ में एक ऐसी घटना हो गई जिससे बाबी–दमन के कार्यक्रम ने तूफानी रूप धारण कर लिया। सादिक नामक महात्मा बाब के एक युवक शिष्य की मानसिक दशा अपने गुरु की दर्दनाक मृत्यु देखकर इतनी बेकाबू हो गई थी कि अन्त में उसने बदला लेने के लिये ईरान के शाह को मारने के लिये आक्रमण कर दिया। जिस समय शाह घोड़े पर सवार हो घूमने को जा रहा था, सादिक ने बिना कुछ सोचे बिचारे एक छर्रे वाली बन्दूक से बिल्कुल पास जाकर 'फायर' कर दिया। पर वह बन्दूक छोटे जानवरों का शिकार करने वाली थी, इससे शाह को थोड़ी-सी ही चोट लग सकी। उसने उसी समय आदेश दे दिया कि सभी 'बाबियों' को इसका जिम्मेदार समझकर सजा दी जाय। सादिक को तो वहीं टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया और तेहरान में ८० बाबियों को जिनको इस घटना का पता भी न था कतल कर दिया गया। अन्य स्थानों में सैकड़ों बाबी पकड़ कर जेलों में ठूंस दिये गये और उन पर अमानुषिक अत्याचार किये जाने लगे। म० बहा को भी उनके देहाती निवास-गृह में पकड़ लिया गया और खूब मार पीटकर कारागार में बन्द कर दिया गया। पहले उनके पैरों के तलवों को बेतों और बांस की खपचियों से खूब पीटा गया और जब वे लोहू लुहान हो गई तो उनको पैदल चलाया गया, जिससे उनको असीम यंत्रणा होती थी। फिर भी उन्होंने न तो कोई दुःख का भाव प्रकट किया और न किसी से शिकायत की।

जेल के भीतर उनको भारी जंजीरों से कसकर काल कोठरी में डाल दिया गया। उसी जंजीर में और भी पाँच बाबी बँधे हुए थे। जब इनमें एक भी हिलता था तो जंजीर के खिचने से सबके पैरों के घावों में रगड़ लगती थी। अधिकारियों ने उनके भोजन की भी व्यवस्था नहीं की थी। इसलिये उनकी पत्नी असिय्यिह खानुम अधिक रात बीत जाने पर या बहुत सवेरे जब सड़कों पर कोई आदमी नहीं होता था खाना बनाकर पहुँचा आती थीं। दिन में उन्हें बाहर निकलने में प्राणों का खतरा था, क्योंकि एक विद्रोही की पत्नी की

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैसियत से उनको कोई भी किसी समय मार सकता था। उनकी सब सम्पत्ति तो उपद्रवियों ने म० बहा के गिरफ्तार होते ही लूट ली थी और इन सबके प्राण भी बड़ी कठिनाई से छुपकर बचे थे।

जेलखाना में जो बाबी बन्द थे उनकी बड़ी क्रूरतापूर्ण ढङ्ग से हत्या की जा रही थी। उस भयङ्करता का वर्णन करते हुए एक लेखक ने बताया है कि "प्रतिदिन प्रातःकाल एक दो बाबियों को जेलखाने से खींचकर बाहर ले जाया जाता था और जल्लाद को सौंपने के पूर्व उन्हें शहर के किसी दुष्ट मनुष्य के सुपुर्द कर दिया जाता था ताकि वह अपनी रुचि के अनुसार उसे अधिक से अधिक यातना पहुँचा सके। लोहार अपनी गर्म सलाखों से बाबी को दाग देता था, कसाई छुरी से उनकी बोटियाँ काट लेता था। कभी-कभी तो किसी बाबी को बाँधकर उसकी छाती में मोमबत्ती जाने लायक छेद कर दिया जाता था और उसमें जलती हुई मोमबत्ती जमा दी जाती थी। जब यह मोमबत्ती जलती हुई पसलियों तक पहुँच जाती थी तो उसे असह्य पीड़ा देकर मार डालती थी। इतनी भयानक यातनाओं के बाद भी यदि कोई जीवित रह जाता था तो उसे जल्लाद को सौंप दिया जाता और वह एक ही बार में धड़ से सर अलग कर देता था।"

पर जैसे-जैसे अत्याचार करने वाले राक्षसों की क्रूरता बढ़ती जाती थी वैसे ही जेल के अन्दर बाबियों का साहस भी बढ़ रहा था। उनकी सहन शक्ति बराबर अधिक हो रही थी और वे दिन-रात भगवान् से प्रार्थना करने में समय को व्यतीत कर देते थे। उनकी सामूहिक प्रार्थनाओं का स्वर निरन्तर कारा-के वातावरण में तैरता रहता था और इस भक्तिभाव से आत्म-विभोर होकर ही वे अमानुषिक पीड़ाओं को भी शान्ति पूर्वक सहन कर लेते थे।

देश निकाले का दण्ड

इस राक्षसी लीला को होते जब चार महीना बीत गये तो एक दिन म० बहा को भी जेलखाने से खींचकर एक ऐसी अदालत के सामने ले गये जहाँ उनको प्राणदण्ड देने का निश्चय पहले से ही किया जा चुका था। उसी अवसर

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर म० बहा के चाचा ने रूसी राजदूत के पास जाकर, जिससे उनकी मित्रता थी, इसकी खबर दी। राजदूत पहले ही सब बातें अच्छी तरह सुन चुका था और उसको विश्वास था कि इस मामले में उनको झूँठमूठ फंसाया गया है। इसलिये वह फौरन अदालत पहुँचा और जैसे ही अदालत म० बहा को मृत्यु-दंड का आदेश सुनाने वाली थी। उसने कहा—'मेरी बात सुनिये, मेरे पास आपको सुनाने के लिये एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण आवश्यक सन्देश है।''

जब कि अदालत के अधिकारी हक्का-बक्का होकर राजदूत की तरफ देख रहे थे उसने गम्भीरतापूर्वक कहा—"क्या आप अभी तक जरूरत से ज्यादा निर्दयता नहीं कर चुके हैं ? क्या आपने इन निरीह और निर्दोषों में से अनेकों को पहले ही मौत के घाट नहीं उतार दिया है ? क्या आपकी खून की प्यास को शान्त करने को पहिले ही पर्याप्त खून खराबी नहीं हो चुकी है ? आप कैसे कह सकते हैं कि इस महापुरुष ने शाह को गोली मारने की मूर्खतापूर्ण साजिश की थी ? आप लोग जानते हैं कि उस बन्दूक से, जिससे उस दुःखी युवक ने शाह पर गोली चलाई थी, एक छोटी चिड़िया भी नहीं मारी जा सकती। कुछ भी हो अब और अधिक अत्याचार नहीं होने चाहिये। इस निरपराध महापुरुष की रक्षा के लिये मैंने अपने देश की सहायता लेने का निश्चय कर लिया है। इसलिये मैं आप लोगों को सावधान करता हूँ कि आज और इस समय के बाद इस राज-पुत्र का यदि बाल भी बाँका हुआ तो इस अपराध की सजा में आपके शहर में खून की नदियाँ बहा दी जायेंगी। आप मेरी बात को जान लें कि मेरे कहने के विरुद्ध अगर आपने कुछ भी किया तो आपके लिये वह कभी उचित न हो सकेगा।''

रूसी राजदूत के न्यायपूर्ण कथन की अवहेलना तेहरान का गवर्नर नहीं कर सका और उसने महात्मा बहा को मौत के बजाय देश निकाले का दण्ड दिया कि वे ईरान को छोड़कर बगदाद (इराक) में जाकर रहें। तैयारी के लिये केवल दस दिन का समय दिया गया। महात्मा बहा प्रभु की इस आकस्मिक कृपा से फाँसी के तख्ते से बचकर जीवित घर तो लोट आये, पर वे जेल की तकलीफों से बहुत दुर्बल और कमजोर हो गये थे। सब लोग यह चिन्ता कर

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहे थे कि ये इतना लम्बा और कठिन सफर कैसे करेंगे ? फिर भी सरकारी हुक्म के अनुसार जो कुछ बन पड़ा इन्तजाम करके चल दिये। वह सर्दियों का मध्यकाल था और मार्ग में मीलों तक बरफ बिछी हुई थी। इन लोगों के पास पूरे वस्त्र और भोजन के साधन भी न थे। तब भी सब नियत समय पर चल पड़े। सबसे छोटे पुत्र को, जिसकी आयु केवल दो वर्ष की थी रास्ते की कठिनाइयों का ख्याल करके एक बुड्ढी नानी के पास छोड़ दिया गया। इस यात्रा में महात्मा बहा तो कमजोरी के कारण अपने को सम्भाल भी मुशकिल से सकते थे। इसलिये सारा भार उनकी पत्नी असिय्यिह खानुम पर था। वह एक बड़े घर की नवयुवती थी जिसे सदा महलों के भीतर रहने का ही अभ्यास था। पर इस यात्रा में वह आँधी, वर्षा, हिमपात का मुकाबला करते हुए इस प्रकार चल रही थी मानो उस पर थकान तथा तकलीफों का कुछ असर ही नहीं होता। बोझा को उठाकर चलते हुए उनकी बाहें लाल हो जाती थीं और दर्द करने लगती थी, तब भी वह हँसती हुई सबकी खबर-सुध लेती ही राह चल रही थी।

दो वर्ष का एकान्त वास

बगदाद पहुँचने पर महात्मा बहा और उनके परिवार को दो कमरों का एक छोटा-सा मकान दिया गया, जिसमें इतने व्यक्ति कठिनाई से गुजर कर सकते थे। असिय्यिह खानुम का स्वास्थ्य यद्यपि मार्ग के कष्टों से बहुत गिर गया था तो भी बगदाद में उन्हीं को अपने परिवार तथा सब साथियों के लिये भोजन बनाना पड़ता था। महात्मा बहा इस यात्रा में कुछ खा-पी न सके और उनको बीमार के उपयुक्त भोजन का अभाव होने के कारण प्रायः उपवास ही करना पड़ता था, इसलिये वे पहले से भी अधिक कमजोर और क्षीण हो गये थे। पर इसकी अधिक चिन्ता न करके बगदाद में पहुँचने के कुछ दिन बाद ही उन्होंने अपना ध्यान बाबी समाज के संरक्षण और संगठन की तरफ लगाया। इससे अवस्था कुछ सुधरने लगी तथा भक्तों और अनुयायियों के हृदय में सुख और शान्ति का अनुभव होने लगा।

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



इसी समय इनका सौतेला भाई मिर्जा माह्या वहाँ आ पहुँचा। महात्मा बहा का प्रभाव और सम्मान देखकर उसके हृदय में बड़ी ईर्ष्या हो रही थी और वह भीतर-ही-भीतर इनको अपदस्थ करके स्वयं बाबी समाज का नेता बन जाने का षड़यंत्र रचने लगा। यद्यपि वह भी आरम्भ में महात्मा बाब का शिष्य बन चुका था पर जब-जब बाबियों पर दमन चक्र चला तब-तब सत्य-विश्वासों का समर्थन करने और उनके लिये कष्ट सहने के बजाय वह किसी गुप्त स्थान में भागकर अपनी जान बचाता फिरता था। अब जब कि महात्मा बहा मौत के मुँह में से निकल कर समाज का पुनर्निर्माण करने लगे तो वह यहाँ आकर भी अपनी कुटिल नीति से बाबी लोगों में फूट फैलाने लगा। महात्मा बहा को यह हर्गिज अभीष्ट न था की बाह्य प्रभाव या सम्मान की खातिर अपने दल में मत-भेद और वैमनस्य का भाव उत्पन्न हो। इसलिये वे एक दिन केवल एक जोड़ा कपड़ा लेकर बिना किसी को कुछ बतलाये किसी अज्ञात स्थान की ओर रवाना हो गये। वे अकेले ही बगदाद से काफी दूर कुर्दिस्तान के सुलेमानियाँ पर्वत पर जाकर निवास करने लगे। कई-कई रातों उनको भोजन नहीं मिल पाता, और अन्य कई तरह की परेशानियों के कारण भी अच्छी तरह आराम भी नहीं कर पाते। पर इस एकान्त में उनको प्रभु का चिन्तन करने और अपनी आत्मा से बात करने का पूरा अवसर मिला। इस समय का हाल उन्होंने एक स्थान में स्वयं इस प्रकार लिखा है—

"हमने उस भूमि पर पहुँचते ही आगे शीघ्र ही होने वाली घटनाओं का अनुमान कर लिया और हमारे रहने से कुछ अनुचित घटना न हो जाय उसके पहले ही एकान्तवास का निर्णय कर लिया। हम वन की ओर चल दिये और वहाँ सम्पूर्ण एकान्त मे दो वर्ष बिताये। इस समय में लगातार आपत्तियों के होते हुए भी हमारी आत्मा अत्यन्त प्रसन्न रही और एक असीम आनन्द का अनुभव किया, क्योंकि उस एकान्त में हमें किसी के स्वास्थ्य या रोग, लाभ या हानि की खबर भी न थी। हमने अकेले ही दुनिया और उसकी वस्तुओं को भुलाकर स्वयं अपनी आत्मा से ही सम्बन्ध रखा। फिर भी इस विषय में प्रत्येक मनुष्य ने अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार भिन्न भिन्न मत और आशय प्रकट

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किये, अन्त में हमको ईश्वर की ओर से लौट आने की आज्ञा मिली। हमने उसका पालन किया और लौट आये। लौट आने पर हमें जो भुगतना पड़ा लेखनी उसे लिख नहीं सकती। सभी जानते हैं कि दो वर्ष से शत्रुभाव रखने वाले इस विनम्र सेवक के विनाश का पूरा प्रयत्न और लगातार कोशिशें करते रहे थे।"

एकान्तवास से वापस आने के बाद उनकी कीर्ति पहले से भी अधिक फैल गई और केवल ईरान के निवासी ही नहीं यहूदी, ईसाई, और जरथोस्ती (पारसी) भी दूर-दूर से उनकी शिक्षाओं को सुनने के लिये बगदाद आने लगे। बगदाद के सरकारी अधिकारियों पर भी उनकी श्रेष्ठता का प्रभाव पड़ा और वे उनको सम्मान की दृष्टि से देखते रहे। पर उनके विरोधी मुल्ला अब भी उनके पीछे पड़े थे। उन्होंने ईरान के शाह के पास सन्देश भिजवाया कि—"बहाउल्ला अब भी मुसलमानी धर्म को पहले से भी अधिक हानि पहुँचाने लगे हैं। इसका ईरान पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा, इसलिये उनको यहाँ से हटाकर किसी दूरवर्ती प्रदेश में भेज देना अत्यावश्यक है।"

एक धर्मान्ध मुल्ला ने तो अनेक अनपढ़ लोगों को महात्मा बहा के विरुद्ध भड़काया और जब वे सड़क पर अकेले जा रहे हों तो हानि पहुँचाने के लिये कहा। महात्मा बहा जब कभी ऐसे भड़काये हुए लोगों को देखते तो निडर होकर उनके पास चले जाते और पूछते कि वे क्या चाहते हैं? फिर वे उनसे मनोरञ्जक वार्तालाप करने लगते जिसमें वे ऐसे तल्लीन हो जाते कि मुल्ला द्वारा बतलायी दुष्ट-योजना उनके दिमाग से गायब ही हो जाती। यह देखकर उस दुरात्मा ने रिदा नामक गुण्डा को कुछ लालच देकर महात्मा बहा को जान से मार देने को तैयार किया। रिदा अवसर पाकर कोट के भीतर पिस्तौल छिपाकर एक सार्वजनिक स्नानागार तक गया जहाँ पर महात्मा बहा जाया करते थे। पर जब उसने उन पर निशाना लगाना चाहा तो उसे अनुभव हुआ कि उसमें गोली चलाने की शक्ति नहीं है।

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अक्का के काले पानी में निर्वासित

जब ईरान सरकार ने तुर्की के शासक से बहुत आग्रह किया तो उसने महात्मा बहा के पास कुस्तुन्तुनिया आने का आदेश-पत्र भेजा। इससे इनके अनुयायियों में बड़ी हलचल मची और उन्होंने इनके घर को हजारों की संख्या में घेर लिया। इससे लाचार होकर इनको १२ दिन नगर के बाहर नजीब पाशा के बगीचे में तम्बुओं में रहना पड़ा ताकि इतने व्यक्ति ठहर सकें। इसी अवसर पर उन्होंने अपने चुने हुए शिष्यों के सामने प्रकट रूप में घोषणा की कि 'म० बाब ने जिस महापुरुष के आने की भविष्यवाणी की थी वह 'ईश्वरीय सन्देश बाहक' मैं ही हूँ "इस घोषणा से समस्त अनुयायियों में बड़ी प्रसन्नता हुई और तभी से इसक- नाम 'बाबी' के बजाय 'बहाई, प्रसिद्ध हो गया बहाई-समाज में यह घटना आगे चलकर 'रिजवान् महोत्सव' के नास से प्रसिद्ध हो गई और अब वे उन दिनों प्रसन्नता सूचक उत्सव मनाते हैं।

२३ अप्रेल १८६३ को महात्मा बहा ने बगदाद छोड़ दिया और वे अपने साथियों को लेकर टिगरिस नदी के तट पर पहुँचे। इस अवसर पर बगदाद का अपार जनसमूह उनको विदा देने आया जिनमें वहाँ का गवर्नर भी था। उस दृश्य का वर्णन करते हुए एक विदेशी लेखक श्री ईसेली मांट ने लिखा है—

टिगरिस नदी के तट तक जनता उनके साथ-साथ आई। श्रीरामचन्द्रजी की विदाई की घटना आज मानो सरयू तीर पर नहीं वरन् दूर इराक में टिग-रिस नदी के किनारे फिर से दुहराई जा रही थी। लोग प्रेम विह्वल हो उनके चारों तरफ उमड़ आये। हर एक की स ध थी कि उनका दर्शन जीभर के कर ले। उनके समीप रहने की सुखमय अनुभूति वे एक क्षण के लिये भी छोड़ना नहीं चाहते थे। लोग अपने को उनके सामने गिरा देते थे जिससे कदाचित् उनका चरणस्पर्श उनको हो जाय। अन्त में वह समय भी आया जब नाव तैयार हो गई और केवट ने उसे टिगरिस की धारा में छोड़ दिया। नाव आंखों से ज्यों-ज्यों ओझल होती जाती थी लोगों की आँखों में त्यों-त्यों आसुओं की धारायें भी बढ़ती जाती थीं।"

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुस्तुन्तुनिया में महात्मा बाह को एक छोटे से विश्राम-गृह में ठहराया गया जो इतने आदमियों के लिये बहुत तंग पड़ता था। उनके पुत्र अब्दुल बहा ने, जो अब लगभग बीस वर्ष के हो चुके थे, वहाँ के गवर्नर से एक पृथक् मकान देने को कहा। इस पर एक और मकान दे दिया गया। महात्मा बहा ने मिर्जा याह्या और उसके परिवार को भी उसी में बुला लिया।

कुस्तुन्तुनिया में ईरान सरकार का सलाहकार राजदूत इनके पारमार्थिक जीवन को देखकर इनका भक्त बन गया और उसने सलाह दी कि वे एक-दो बार वहाँ की अदालत में पधार कर अधिकारियों से मिलें तो उनके रहने-सहने की व्यवस्था में बहुत सुधार हो सकेगा। पर महात्मा बहा ने उत्तर दिया—"मुझे कोई इच्छा नहीं है कि उनसे किसी बात का अनुरोध करूँ। मैं सुल्तान का आदेश पाकर यहाँ आया हूँ और वह जो कुछ भी नया आदेश भेजेगा उसे मानने को तैयार हूँ। मेरा काम इस दुनियाँ का नहीं है। वह कार्य किसी अन्य स्थान का है जो इस धरती से बहुत दूर है। फिर इन लोगों से मैं क्यों दया की माँग करूँ।" सचमुच दैवी-मार्ग के पथिकों के लिये पार्थिव सुख-सुविधाओं का मूल्य अत्यल्प होता है और वे उनके लिये कभी चिन्तित नहीं होते। उनका विश्वास होता है कि संसार की संचालक शक्ति स्वय उनके योग-क्षेम की खबर लेती रहती है।

कुस्तुन्तुनिया में चार महीने रहने के पश्चात् इनको एड्रियानोपल भेज दिया गया। इस यात्रा में इनको अभूतपूर्व कष्ट सहन करना पड़ा, क्योंकि बरफ पड़ रही थी और इनके पास न पूरा कपड़ा था न खाने के लिये पौष्टिक खुराक। ठण्ड इतनी अधिक थी कि सोतों से पीने का पानी लेने के लिये एक-दो घण्टे तक आग जलाकर बरफ को पिघलाना पड़ता था। एड्रियानोपल टर्की के सबसे दूर के कोने में बसा एक छोटा शहर था, जिसमें ज्यादातर सरकार का विरोध करने वाले अपराधी कष्ट सहने को भेजे जाते थे। यहाँ महात्मा बहा को रहने-सहने में बड़ी असुविधा सहन करनी पड़ी।

पर सबसे बड़ी तकलीफ तो उनको यह थी कि महात्मा बाह के ही शिष्य कहलाने वाले दो अधम व्यक्ति भीतर ही भीतर इनके विरुद्ध षड़यन्त्र

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रचते रहते थे और चाहते थे कि किसी प्रकार इनका अन्त हो जाय अथवा बदनाम कर दिये जायें। बाबियों के विरोधी शिया-दल वालों की शत्रुता, आक्रमण और क्रूरताओं की तो उनको परवाह नहीं थी और वे अपने आत्म-बल से उनके बड़े से बड़े अत्याचारों को सहन करके अपने सिद्धान्तों पर अटल रह चुके थे। पर इन घर के दुश्मनों की समस्या बड़ी टेढ़ी थी। मिर्जा याह्या तो इनका चचेरा भाई ही था और दूसरा सैयद मुहम्मद भी इनका निकटवर्ती था। सैयद मुहम्मद का महात्मा बहा ने कभी कुछ बिगाड़ा न था, पर वह केवल ईर्ष्यावश इनका शत्रु बन गया था और महात्मा बहा तथा उनके साथियों के ऊपर सङ्कट और विपत्ति लाने की तरकीबें सोचा करता था। उसने मिर्जा याह्या को बाबियों का नेता बनाने का वचन दिया और आगे चल उसे उक-साया कि वह महात्मा बहा को मार डाले। इसी कारण बहाई ग्रन्थों में सैयद मुहम्मद को बहाई समाज का जुडास (ईसा का धोखेबाज शिष्य) अथवा कंस कहा गया है।

इस षड़यन्त्र के अनुसार पहले तो मिर्जा याह्या ने महात्मा बहा के आज्ञाकारी भाई मिर्जा मूसा के पास रहकर जड़ी बूटी और विषों का ज्ञान प्राप्त किया और फिर महात्मा बहा पर उन्हीं का प्रयोग करने का प्रयत्न करने लगा। उसने एक दिन बड़ी श्रद्धा-भक्ति दिखाकर महात्मा बहा को अपने घर आने का निमन्त्रण दिया और वहाँ चाय के प्याले में विष मिलाकर पिला दिया। इसके फलस्वरूप वे एक महीने तक बहुत बीमार रहे। उनके लिये जो डाक्टर बुलाया वह उनकी शोचनीय दशा देखकर बड़ा दुःखी हुआ और उनके पैरों पर गिर गया। उसने उनको कुछ दवा दी और अपने घर वापस पहुँच कर ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उसके प्राण ले ले और महात्मा बहा को जिन्दा रखे। कुछ समय बाद वह सचमुच बीमार होकर मर गया। उसका ईश्वर में विश्वास ऐसा ही अटल और दृढ़ था।

इसके बाद मिर्जा याह्या ने उस कुँए में जहर डाल दिया जिससे महात्मा बहा के परिवार के लिये पानी आता था। इसके फल से परिवार के सब लोगों में एक अजीब बीमारी के लक्षण दिखाई पड़ने लगे।

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जब इन लोगों की नीचता बहुत बढ़ गई और उनकी दलबन्दी के कारण झगड़े-फसाद का अन्देशा पैदा हो गया तो सरकार को हस्तक्षेप करना पड़ा और महात्मा बहा को अक्का तथा मिर्जा याह्या को साइप्रस टापू भेज दिया। यह अक्का सबसे बुरा कैदखाना था, जिसे टर्की का कालापानी कहा जाता था। इस अवसर पर महात्मा बहा ने ईरान के शाह को एक पत्र भेजा जिसमें अब तक के जुल्मों का वर्णन करके इस अन्तिम दंड का जिक्र करते हुए लिखा था—

"हम शीघ्र इस दूरवर्ती देश (एड्रियानोपल) से हटाकर 'अक्का' के कारागार में पहुँचाये जाँयेंगे। लोगों के कथन के अनुसार यह स्थान संसार भर के ऊजड़ नगरों में सर्वप्रधान है। देखने में भद्दा है और इसकी जलवायु भी खराब है। अर्थात् वह उल्लुओं के रहने का अड्डा है, उल्लुओं के शब्द के सिवा वहाँ कुछ सुनाई नहीं देता। ऐसे स्थान पर इस सेवक को बन्द करने का विचार किया जा रहा है, हमारे थोड़े से सुख-चैन के मार्ग को भी अवरुद्ध किया जा रहा है। हमारे अवशिष्ट दिनों में सब प्रकार की सांसारिक सुख-सामग्री को हमसे छीना जा रहा है। ईश्वर की शपथ है कि यातनाएँ मुझे चाहे जैसा दुर्बल बना दें और भूख मुझे मार ही क्यों न डाले, चाहे कठोर शिलायें मेरा बिछौना और जङ्गली हिंसक जीव मेरे साथी बनाये जायें, फिर भी प्राणिमात्र के शासक एवं समस्त राष्ट्रों के सृष्टा परम प्रभु की शक्ति से मैं उफ तक न करूँगा, बल्कि धैर्य और दृढ़ता से सब कुछ सहता हुआ भी शान्त और सन्तुष्ट रह कर ईश्वर का धन्यवाद करता रहूँगा। मुझे पक्का भरोसा है कि वह दयालु, उदार तथा सर्व सामर्थ्यवान् परमेश्वर अपने सच्चे भक्तों की सहायता करेगा।"

निःसन्देह अब तक महात्मा बाह की रक्षा दैवी-कृपा से ही हो रही थी अन्यथा प्रकट और अप्रकट विरोधियों ने उनको नाश करने की किसी युक्ति में कमी नहीं रहने दी थी। शारीरिक हानि से लेकर बदनामी तक सब उपायों से उन्होंने उनके नाम और काम को नष्ट करने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया। पर नतीजा वही हुआ कि 'ठंडा लोहा गरम लोहे को काटता है।' महात्मा बहा सदा शान्त रहे, उसी विश्व-नियन्ता पर दृढ़ विश्वास रखकर अपना कर्तव्य पालन

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करते रहे। इससे एक-एक करके सभी काली घटायें छँटती चली गईं और अन्त में सत्य के सूर्य का प्रकाश चारों तरफ फैल गया। यद्यपि वे जीवन के अन्तिम समय तक शासकों की निगाह में कैदी ही बने रहे, पर उसी स्थान से उन्होंने सच्चे ज्ञान और कर्म की वह गङ्गा बहाई जिसमें स्नान करके आज विश्व के लाखों व्यक्ति शान्ति प्राप्त कर रहे हैं और अपने सेवा-भाव द्वारा अन्य बहुतों को भी शीतलता प्रदान कर रहे हैं।

अक्का में आरम्भिक जीवन

जैसा कहा जा चुका है अक्का संसार के सबसे खराब जेलखानों में से एक समझा जाता था। वह पूरा शहर ही एक जेलखाना था, जहाँ टर्की के सुलतान की तरफ से प्राय: राज-विद्रोही अथवा अन्य भयङ्कर आजन्म कैदी भेजे जाते थे। उसमें महात्मा बहा ने सन् १८६८ से १८९२ तक चौबीस वर्ष व्यतीत किये। आरम्भ में तो उनको एक गन्दी फौजी बारक में रख दिया गया। यह स्थान बहुत तङ्ग और गन्दा था और यहाँ महात्मा बहा और उनके ८० से अधिक साथियों को बहुत ही अस्वास्थ्यकर वातावरण में रहना पड़ा था। बिछौने आदि की कोई व्यवस्था न थी और भोजन ऐसा बुरा और अधूरा मिलता था कि अन्त में इनको अपनी भोजन सामग्री स्वयं खरीदने की आज्ञा माँगनी पड़ी। पहले कई दिन तक बच्चे लगातार रोते रहे जिससे सोना भी कठिन हो गया। फिर गन्दगी के कारण ज्वर अतिसार के रोग फैल गये जिससे पाँच को छोड़कर दल के सब व्यक्ति बीमार हो गये। चार व्यक्ति तो बीमारी से मर भी गये। महात्मा बाह ने ऐसे दो शहीदों के कफन के खर्च के लिये अपना गलीचा बेचने को दे दिया। पर जेलखानों के भ्रष्ट तरीकों के अनुसार पहरे पर रहने वाले सिपाहियों ने रुपये अपनी जेब में डाल लिये और लाशों को यों ही गड्ढे में फेंक दिया।

इस अगम्य स्थान में भी अनेक भक्तजन ईरान से पैदल चलकर अपने आराध्य के दर्शन करने आते थे। पर आरम्भिक दिनों में महात्मा बहा की इतनी कड़ी निगरानी होती थी कि वे किसी से किसी प्रकार नहीं मिल पाते

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

थे। उन दर्शनाभिलाषियों को शहर के भीतर भी नहीं घुसने दिया जाता था। तब वे नगर के परकोटे के बाहर एक मैदान में खड़े हो जाते थे जहाँ से महात्मा बाह के कारागार की खिड़कियाँ दिखाई पड़ती थीं। वे लोग वहीं से किसी समय उनकी एक झलक देखकर और इतने से ही सन्तोष मानकर अपने घरों को वापस लौट जाते थे।

दो वर्ष के बाद स्थिति कुछ बदली। एक तो अक्का के अधिकारियों को महात्मा बाह की सचाई, शान्तिप्रियता और महानता का परिचय मिल गया और दूसरे टर्की सरकार ने नवीन सैनिक तैयारियों का आदेश दिया। इससे फौजी बारक की आवश्यकता सिपाहियों के लिये हुई और इनको किसी और मकान में रहने का आदेश दिया गया। यहाँ भी आरम्भ में स्थान की बहुत तङ्गी और अन्य असुविधायें थीं, पर धीरे धीरे अवस्था में कुछ सुधार हुआ और कुछ और कमरे रहने को मिल गये। यहाँ पर दर्शकों को भी कभी-कभी आ जाने दिया जाता था तथा अन्य बन्धन भी धीरे-धीरे ढीले पड़ गये।

इन्हीं दिनों महात्मा बाह के परिवार में एक हृदय विदारक घटना हो गई। उनके सबसे छोटे पुत्र, जिनको १८५३ में ईरान से देशनिकाले के समय नानी के पास छोड़ दिया गया था, कुछ बड़े होने पर माता-पिता के पास आ गये थे और सब कष्टों को सहन करके सेवा-कार्यों में लगे रहते थे। अब वे बाईस वर्ष के हो चुके थे और महात्मा बहा की आज्ञाओं को लिखने और प्रचारित करने का कार्य करते थे। एक दिन वे ऊपर की मञ्जिल की एक कोठरी में प्रार्थना करते हुए इधर-उधर चहलकदमी कर रहे थे कि अचानक उनका पैर रोशनदान में पड़ गया और वे नीचे की मञ्जिल में रखे लकड़ी के बक्स के ऊपर गिर गये। बक्स का कोई नोकीला टुकड़ा उनकी पसलियों को चीरता हुआ निकल गया। महात्मा बहा ने अन्तिम समय जानकर उनकी इच्छा पूछी तो उन्होंने यही याचना की कि जो सैकड़ों व्यक्ति दूर-दूर के स्थानों से आपके दर्शनों के लिये आते हैं और शहर के बाहर से ही निराश हो वापस चले जाते हैं उनके लिये दर्शन देने की उचित व्यवस्था कर दी जाय। उन्होंने मरण-काल उपस्थित होने पर भी अपने लिये किसी प्रकार की चिन्ता न करके दूसरे

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोगों के कष्टों को मिटाने का ही ध्यान रखा। यह देखकर महात्मा बहा बहुत सन्तुष्ट हुए और उन्होंने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। तब से दर्शनार्थियों के लिये विशेष सुविधा कर दी गई।

अब अक्का का नया गवनर श्री अब्दुल बहा का मित्र बन गया और उसने कई बार महात्मा बहा के दर्शनों की अभिलाषा प्रकट की। अन्त में एक बार उसे अनुमति दे दी गई और वह इसे अपना बड़ा सौभाग्य समझकर भक्ति-भाव के साथ इनके सम्मुख आया। उसने पूछा कि क्या वह कोई सेवा कर सकता है? महात्मा बहा ने कहा, "तुम्हारे करने लायक कोई व्यक्तिगत सेवा तो जान नहीं पड़ती, पर वह अक्का निवासियों की सुविधा के लिये यह प्रार्थना यह प्रार्थना करना चाहते हैं कि पहाड़ों से अक्का नगर में ताजा पानी पहुँचाने की व्यवस्था की जाय।" इससे उसका भक्ति-भाव और भी बढ़ गया और उसने शीघ्र से शीघ्र पानी की बहुत बढ़िया व्यवस्था कर दी जिससे वहाँ के निवासी आज तक लाभ उठा रहे हैं।

जेल के द्वार खुल गये

महात्मा बहा को कारागार में रखे जाने का जो आज्ञापत्र टर्की के सुल्तान अब्दुल अजीज ने निकाला था वह कभी रद्द किया या बदला नहीं गया, पर पाँच-सात वर्ष बाद ऐसी अवस्था हो गई कि सब प्रकार के प्रतिबन्ध अपने आप समाप्त हो गये। एक दिन बात-चीत में उनके मुँह से निकल गया—"नौ वर्ष से मैंने हरियाली देखी नहीं। ग्राम आत्मिक-संसार के समान है और नगर दैहिक संसार की तरह।" यह सुनकर उनके पुत्र श्री अब्दुल बहा ने समझा कि वे किसी ग्रामीण ढङ्ग के स्थान में रहना अधिक पसन्द करते हैं। इस पर उन्होंने प्रयत्न करके अक्का नगर से बाहर एक पाशा (सरदार) की कोठी और बगीचे को किराये पर ले लिया और उसे साफ करके महात्मा बहा से उसमें चलकर रहने की प्रार्थना की। पर उन्होंने कहा कि 'मैं कैदी हूँ, नगर के बाहर नहीं जा सकता।' अब्दुल बहा ने तीन बार प्रार्थना की, पर तीनों ही बार इनकार कर दिया, जिससे अधिक कहने का उनको साहस नहीं हुआ। अन्त में

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस समस्या को हल करने के लिये उनको एक अन्य भक्त द्वारा बहुत अधिक प्रार्थना करानी पड़ी, तब कहीं वे वहाँ रहे।

दो वर्ष तक इस बाग में रहने के बाद अक्का के पास ही बाहजी नामक स्वच्छ और सुन्दर बस्ती में एक बहुत अच्छा मकान नाममात्र के किराये पर मिल गया। बात यह हुई कि वहाँ भयङ्कर बीमारी का प्रकोप हो गया। उस घर का स्वामी डर के मारे अपने परिवार के साथ कहीं दूर भाग गया और चाहता था कि कोई बिना किराया दिये भी उसके मकान में रहा करे जिससे उसके घर की देख-भाल होती रहे। श्री अब्दुल बहा ने उसी में महात्मा बहा के रहने की व्यवस्था कर दी, तब से सबको उनसे मिलने और दर्शन करने की सुविधा हो गई।

महात्मा बहा ने अपने आन्तरिक सद्व्यवहार और दैवी-प्रेम के प्रभाव से लोगों को ऐसा वशीभूत कर लिया था कि अब बड़े-बड़े शासक और पदाधिकारी भी उनका सम्मान करने लगे थे। यहाँ तक कि गवर्नर और बड़े जनरल भी भेंट करने के लिये बार-बार प्रार्थना किया करते थे, जिनको बहुत कम स्वीकार किया जाता था। एक बार नगर के प्रधान शासक ने ऐसी ही प्रार्थना की और कहा कि उसको उच्च अधिकारियों ने आदेश दिया है कि वह एक फौजी जनरल को साथ लेकर उस ईश्वरीय महापुरुष के दर्शन करे। यह प्राथना स्वीकार कर ली गई। उसका साथी जनरल, जो एक स्थूल आकार का योरोपियन था उनके दर्शन से इतना प्रभावित हुआ कि द्वार लाँघते ही घुटनों के बल जमीन पर बैठा ही रह गया। इन दोनों दर्शकों की ऐसी दशा हुई और वे अन्त तक ऐसे विनम्र भाव से हाथ जोड़े बैठे रहे कि अन्य देखने वाले विस्मित रह गये।

वास्तव में दैवी-प्रभाव या आध्यात्मिक शक्ति की महिमा अनिर्वचनीय है। दो स्वेच्छाचारी और पाशविक शक्ति सम्पन्न सम्राट् उनके विरोधी थे और उन्होंने उनको कारावास का दण्ड दे रखा था। पर जब संसार में ईश्वरीय सन्देश के प्रचार का समय आया तो सब बन्धन अपने आप समाप्त हो गये। योरोपीय देशों के अनेक सत्ताधारी व्यक्ति अपने आप उनके प्रति सम्मान प्रकट

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने के लिये अक्का आने लगे। उस समय मालूम होता था कि महात्मा बहा कैदी नहीं वरन् राजाओं के भी राजा हैं। वे वहीं से बड़े-बड़े देशों के सम्राटों के नाम जो 'शिक्षा पत्र' भेजा करते थे उनका महारानी विक्टोरिया और अन्य कई प्रमुख शासकों की तरफ से बड़े सम्मानयुक्त शब्दों में उत्तर मिला था। इसके बाद वे बड़ाजी में राजाओं के समान गौरवपूर्ण स्थिति में ही रहे और कभी चर्चा चलने पर कह देते थे कि 'इतना दुःखपूर्ण कारावास निश्चय ही अदन के स्वर्ग में बदल गया है।' सन् १८९० में इंगलैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ प्रो० एडवर्ड जी० ब्राउन उनसे मिलने आये थे। उन्होंने अपनी भेंट का जो वर्णन किया है उससे महात्मा बहा के विश्वव्यापी प्रभाव पर कुछ प्रकाश पड़ता है। प्रो० ब्राउन कहते हैं—

"मेरा पथ प्रदर्शक जरा ठहरा और मैंने बूट उतार लिये। फिर झट से हाथ का संकेत देकर उसने पर्दा हटाया और जैसे ही मैंने प्रवेश किया उसने पर्दा गिरा दिया। मैं एक बड़े कमरे में था जिसके ऊपर के भाग में एक मसनद था और द्वार के समीप दो तीन कुर्सियाँ पड़ी थीं। दो या तीन क्षण बीते होंगे कि मेरा हृदय भय और विस्मय से धड़कने लगा, मुझे अच्छी तरह ज्ञात हो गया कि कमरा खाली नहीं है। मैंने कमरे के एक कोने में दीवार के साथ मसनद पर बैठे हुए एक अद्भुत और आदरणीय व्यक्ति को देखा। उनके मस्तक पर एक ऊँची टोपी थी और उस पर नीचे की तरफ इद-गिर्द एक छोटी-सी सफेद पगड़ी लपेटी हुई थी। उस चेहरे को जिस पर मेरी दृष्टि पड़ रही थी, मैं कभी भूल नहीं सकता, यद्यपि उसका वर्णन कर सकना मेरी शक्ति से बाहर है। वह चमकती हुई तेज आँखें मनुष्य के हृदय के भाव को आर-पार पढ़ लेती थीं; प्रशस्त ललाट जिससे शक्ति और तेज टपकता था और उनके चेहरे तथा माथे पर की झुर्रियाँ जिस अवस्था को प्रकट कर रही थीं, उसे उनके घने काले बाल और कमर तक लम्बी और खूब भरी हुई दाढ़ी दोनों मिलकर झुठला रहे थे। कहने की आवश्यकता नहीं कि मैं किसके सामने खड़ा था। मेरा सिर उस व्यक्ति के आगे झुका हुआ था जो लोगों की उस भक्ति और सम्मान का पात्र था जिसके लिये सम्राट् भी तरसते हैं।

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक मधुर पर गम्भीर प्रभावशाली ध्वनि ने मुझे बैठने की आज्ञा दी और कहा— "ईश्वर का धन्यवाद है कि तुम्हें प्राप्त हुआ। तुम एक कैदी और निर्वासित से मिलने आये हो। हम संसार भर के कल्याण और मनुष्य मात्र के सुख के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहते, तो भी लोग समझते हैं कि हम झगड़े और बगावत फैलाते हैं, इसलिये कारावास और निर्वासन के अधिकारी हैं। सब जातियाँ एक ईश्वर पर विश्वास लायें, सब लोग एक-दूसरे को भाई समझें, मनुष्यमात्र में एकता और प्रेम बन्धन सुदृढ़ हो जायें, मतमतान्तरों के झगड़े रुक जायें, जातियों का भेद-भाव दूर हो जाय, भला इसमें क्या हानि है ? और अवश्य यही होकर रहेगा। यह स्वार्थ के झगड़े-बखेड़े और यह विनाशकारी युद्ध अवश्य बन्द होंगे और पूर्ण शान्ति संसार में स्थापित हो जायगी। क्या योरोप में भी यह बात आप लोगों को अभीष्ट नहीं ? क्या मसीह ने यही भविष्य-वाणी नहीं की थी ? तो भी तुम्हारे राजा और शासकगण अपने कोष को मानव जाति का सत्यानाश करने में खर्च कर रहे हैं, उसके कल्याण या सुख के लिये नहीं। यह झगड़े, यह रक्तपात और तमाम भेद-भाव अवश्य रुकना चाहिये। सभी मनुष्य एक सम्बन्ध और परिवार में आने चाहिये। मनुष्य को इस बात का गर्व नहीं करना चाहिये कि वह अपनी जाति या देश का भक्त है, बल्कि उसको इस बात का गर्व होना चाहिये कि वह समस्त मानव जाति से प्रेम करता है।"

पवित्रात्मा बहा की शिक्षायें

इस प्रकार महात्मा बहा अपने जीवन के अन्तिम समय (२९ मई १८९२) तक अपने अनुयायियों तथा संसार के अन्य सब मनुष्यों को भी विश्व बन्धुत्व, विश्व-शान्ति, विश्व-एकता की शिक्षा देते हुए मनुष्यों को आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने का सन्देश सुनाते रहे। उनके उपदेशों की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि उनमें सांसारिकता और आध्यात्मिकता का अपूर्व ढङ्ग से समन्वय किया गया था। महात्मा बहा ने अपने प्रत्येक अनुयायी को विवाह करके गृहस्थ जीवन व्यतीत करने की आज्ञा दी और पुरोहिताई का कार्य एक पेशे की तरह

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करना बिल्कुल बन्द कर दिया। वे नहीं चाहते थे कि मनुष्य धर्म के नाम पर निकम्मा जीवन बिताये और दूसरों पर भार-स्वरूप बने।

धर्म को सभ्यता और शान्ति का आधार बनाया जाय

महात्मा बहा का कथन था कि धर्म मनुष्य की उन्नति और कल्याण का सबसे बड़ा साधन है। जो धर्म-पालन द्वारा विश्व का अच्छा नागरिक और दूसरों का हित साधन करने वाला नहीं बनता तो समझना चाहिये कि उसने धर्म का जो रूप समझा है उसमें कोई भूल है। धर्म का पहला शुभ परिणाम महात्मा बहा ने अपना और समस्त मनुष्यों का कल्याण ही बतलाया है। उन्होंने घोषणा की है—

"संसार के सुप्रबन्ध और मानव जाति की शान्ति का सबसे बड़ा साधन धर्म है। धार्मिक नेताओं की दुर्बलता ने अज्ञानियों का हौसला बढ़ा दिया और उन्हें धृष्ट तथा उद्धत बना दिया है। मैं सच कहता हूँ कि ज्यों-ज्यों धर्म का ऊँचा स्तर नीचा किया जायेगा, वैसे ही धूर्तों की उद्दण्डता बढ़ेगी और अन्त में विप्लव का कारण बनेगी।"

"पश्चिम के लोगों की सभ्यता देखो, उसने संसार भर में कैसी अशान्ति फैला दी है। बहुत बुरे-बुरे हथियारों की सृष्टि हुई और उनसे मानव-जीवन का इतनी क्रूरता से ध्वंस हुआ जिसे संसार ने आज तक न देखा और न सुना है। इन अत्यन्त बढ़ी हुई तीव्र बुराइयों का सुधार तब तक नहीं हो सकता जब तक संसार भर की जातियाँ एक होकर केवल एक ही धर्म में सम्मिलित न हो जायें।"

महात्मा बहा ने योरोपीय सभ्यता का जो दोष उस समय बतलाया था और उस समय जो नन्हा पौधा ही था, वह निरन्तर बढ़ कर आज महा विशाल वृक्ष के रूप में परिणत हो गया है, जिसकी चारों ओर फैली शाखाओं ने संसार को एक प्रकार ढक लिया है। इसलिये महात्मा बहा ने संसार को अपने अधिकारों पर ही टिकने और न्याय का पूरा ध्यान रखने की शिक्षा भी दी है।

इस विषय में महात्मा बहा ने अपने उपदेशों में ठीक उन्हीं शब्दों का

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयोग किया है जो हमारे शास्त्रों में हजारों वर्ष पूर्व लिखे जा चुके हैं। जिस प्रकार हमारे यहाँ कहा है—"आत्मना प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् वैसे ही महात्मा बहा के उपदेशों में ये वाक्य मिलते हैं—

"हे मानव पुत्रो ! यदि तुम ईश्वर की दया चाहते हो तो अपने हित पर ध्यान न देकर उन बातों पर ध्यान दो जिनसे मानव जाति का भला हो सके। यदि तुम न्याय चाहते हो तो तुम औरों के लिये वही पसन्द करो जो तुम अपने लिये करते हो।"

विश्व शान्ति का प्रोग्राम

यह एक आश्चर्य की ही बात है कि महात्मा बहा ने आज से सौ वर्ष पहले, जबकि संसार में बड़े-बड़े साम्राज्य स्थापित हो चुके थे और उनके सम्राट् बड़ी धूमधाम से शासन कर रहे थे, विश्व-शान्ति की बात उठाई और एक विश्व-परिषद् की योजना उपस्थित की। इस बीच में यद्यपि दो बार ऐसी परिषद् 'लीग आफ नेशन्स' और 'यू. एन. ओ.' के नाम से बन चुकी हैं पर अभी तक उच्च शिक्षित व्यक्ति भी इसको व्यावहारिक नहीं समझते। पर महात्मा बहा ने उस युग में ही लिख दिया था—

"आज परमात्मा की यह इच्छा हुई कि संसार में सुख-शान्ति और इसके निवासियों की उन्नति हो तो उसने आज्ञा दी कि जब समय आयेगा तो एक विश्वव्यापी सभा स्थापित करने की बात को लोग मान लेंगे। संसार के शासक और नरेश इसमें उपस्थित होने को बाध्य होंगे और उनको ऐसे ढङ्ग सोचने पड़ेंगे जिससे मनुष्य मात्र में महती शान्ति स्थापित हो। बड़े-बड़े राज्य लोगों की सुख-शान्ति के निमित्त परस्पर मिलकर रहना निश्चित करेंगे और यदि कोई शासक दूसरे पर आक्रमण करेगा तो शेष सब मिल कर उसको रोकेंगे।"

यद्यपि आज महात्मा बहा की शिक्षायें सिद्धान्त रूप से सर्वोत्तम मान ली गई हैं, राष्ट्रसंघ स्थापित किया जा चुका है और यह भी स्वीकार कर लिया गया है कि अगर एक राष्ट्र दूसरे पर आक्रमण करे तो उसे रोका जाय, पर

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



व्यवहार में तरह-तरह की कठिनाइयाँ आ रही हैं और अभी महात्मा बहा की बतलाई प्रणाली के यथार्थ रूप में स्थापित हो जाने में कुछ देर जान पड़ती है।

आर्थिक सुव्यवस्था

आर्थिक समन्वय इस युग की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समस्या है। सच पूछा जाय तो आज संसार में जितने झगड़े दिखाई पड़ रहे हैं उनमें से तीन-चौथाई का सम्बन्ध इसी विषय से है। बहाई उपदेशक ने इस विषय पर गम्भीर रूप से विचार किया है और धनी-निर्धन के बीच सद्भावना का सम्बन्ध स्थापित करने पर बड़ा जोर दिया है। पर वे उन चरमपंथियों से भी सहमत नहीं जो वर्तमान पद्धति को जड़मूल से उखाड़ कर बराबरी के आधार पर नवीन समाज की रचना करना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में महात्मा बहा के सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण करते हुए श्री अब्दुलबहा ने कहा है—

"लोगों की आवश्यकताओं का प्रबन्ध ऐसा होना चाहिये कि दरिद्रता का लोप ही हो जाय, प्रत्येक व्यक्ति जहाँ तक सम्भव हो सके अपनी स्थिति और अधिकार के अनुसार सुख-चैन से जीवन बिता सके। हम संसार में देखते हैं कि एक ओर तो वे मनुष्य हैं जो धन से भरपूर हैं और दूसरी ओर वे हैं जो भूखे मर रहे हैं, एक वे हैं जो बड़े-बड़े महलों में रहते हैं और दूसरे वे हैं जिन्हें सिर छुपाने के लिये भी स्थान प्राप्त नहीं। व्यवहार की यह दुर्दशा सर्वथा अनुचित है और इसका अवश्य इलाज होना चाहिये, पर इलाज में बड़ी सावधानी बर्तनी चाहिये। मनुष्यों में पूर्ण समता स्थापित कर देने से इसका सुधार नहीं हो सकता। ऐसी समता तो एक भ्रमात्मक कल्पना मात्र ही है और अव्यवहार्य है। ऐसी समता यदि स्थापित भी कर ली जाय तो वह देर तक टिक नहीं सकती और यदि ऐसी सत्ता सम्भव भी हो गई तो सारे संसार की व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट हो जायगी।

"इसमें सन्देह नहीं कि आजकल जब कुछ लोग अनन्त धन के स्वामी हैं और दूसरे लोग दयनीय अवस्था में पड़े हैं, तो इन अवस्थाओं का नियमन और सुधार अवश्य होना चाहिये। दोनों 'अति' अच्छी नहीं है। जब हम दरिद्रियों

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को भूखों मरने तक की दशा में पहुँचा देखते हैं, तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि अन्याय कहीं न कहीं विद्यमान है। मनुष्यों को चाहिये कि वे इन बातों के सुधार के लिए प्रयत्न करें और ऐसी अवस्थाओं को बदल डालने में विलम्ब न करें जिनसे लोगों की एक बड़ी संख्या दारिद्र्य के कष्ट में पिसती चली जा रही है।"

आगे चलकर मजदूरों की स्थिति पर विचार करते हुए उन्होंने लिखा है—

"समय आ रहा है जब कि लोग दूसरों के गाढ़े परिश्रम से धन संचय न कर सकेंगे। धनी लोग स्वेच्छापूर्वक अपना धन बाँटा करेंगे। वह स्वभाव से ही, मन की प्रेरणा द्वारा इस कार्य में प्रवृत्त होंगे। आर्थिक प्रश्नों को सुलझाना धनी और गरीबों के परस्पर विरोध या लड़ाई-झगड़ों से सिद्ध न होगा, बल्कि दोनों के पारस्परिक सहकार से ही सिद्ध होगा।"

इसका तात्पर्य है कि समाज में से अमीर और गरीब का अत्यधिक अन्तर निश्चय ही मिट जाना चाहिये और भूखा-नङ्गा किसी को नहीं रहने देना चाहिये। म० बहा सब लोगों में पूर्ण समानता को न तो सम्भव समझते हैं और न व्यवहारिक। उनकी यह सम्मति भारतीय शास्त्रों से मिलती है। यहाँ भी धन का बराबर बँटवारा सम्भव नहीं माना गया है वरन् यही कहा गया है कि धनवान् लोग अपना धर्म समझकर असमर्थ लोगों की सहायता करें और धन को एक स्थान पर बन्द रखने के बजाय दान तथा उदारता के विभिन्न कार्यों द्वारा समाज में वितरित करते रहें। यद्यपि वर्तमान समय में जो समाजवाद और कम्यूनिज्म के आन्दोलन फैल रहे हैं उनका सारांश भी यही है, पर उनमें जोर-जबर्दस्ती को ही इसका उपाय बतलाया गया है और वे धनी और गरीब के अन्तर को बिल्कुल मिटा देने के पक्षपाती है। इस समय दुनियाँ में विश्व-युद्ध की जो आग सुलग रही है उसका सबसे बड़ा कारण यह धन के वितरण की समस्या ही है। अभी तक के अनुभव से यही जान पड़ता है कि इसका समाधान किसी प्रकार की उग्र आदर्शवादिता से न होकर मध्यम-मार्ग से ही हो सकेगा।

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पुरुष और स्त्रियों में समानता

धनी और गरीब या मालिक और मजदूर के समान ही एक बहुत बड़ी सामाजिक समस्या नर और नारी की स्थिति सम्बन्धी है। वर्तमान समय में नारियों के पिछड़ जाने से समाज के विकास में बड़ी बाधा पड़ रही है। छोटी अवस्था में बालकों का पालन तथा किसी हद तक शिक्षण माता के हाथ में ही रहता है। मूर्ख मातायें अपने अज्ञान के कारण उसी अवस्था में बच्चों में ऐसी बुरी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न कर देती हैं जिनसे आजीवन उनको मार्ग में कठिनाइयाँ अनुभव होती रहती हैं। ईरान और मुस्लिम देशों की स्त्रियाँ तो इस दृष्टि से और भी अधिक अन्धकार में थीं और वहाँ के धार्मिक नेता—मुल्ला-मौलवी भी उसी मार्ग के समर्थक थे, तो भी म० बहा ने बड़े साहस के साथ स्त्रियों को स्वतन्त्रता, शिक्षा, धनोपार्जन आदि का समर्थन किया। इस सम्बन्ध में बहाई ग्रन्थों में कहा गया है—

"मानव-समाज एक पक्षी के समान है जिसके दो पङ्ख होते हैं—एक पुरुष और दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पङ्ख मजबूत न होंगे और सम्मिलित प्रयत्न से हिलाये न जायेंगे, पक्षी उड़ नहीं सकता। समय के प्रवाह के अनुसार स्त्रियों के लिये आगे बढ़ना और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़कर पुरुषों के समान ही कार्य करना आवश्यक है। उन्हें पुरुषों के समान बनना चाहिये और पुरुषों के समान ही उनको अधिकार मिलने चाहिये।"

अनेक पुरुष स्त्रियों के अधिकारों के विपक्ष में यह दलील दिया करते हैं कि स्त्रियों ने कभी ऐसे बड़े-बड़े काम नहीं किये जो पुरुषों ने किये हैं। पर गहराई से विचार करने और जाँच पड़ताल करने पर यह दलील कमजोर ही जान पड़ती है। इतिहास को देखने से अनेक ऐसी स्त्रियों का पता चलता है जिन्होंने बहुत बड़े-बड़े काम किये हैं। हमारे देश के पिछले दो-तीन सौ वर्ष के इतिहास में ही रानी दुर्गावती, चाँदबीबी, लक्ष्मीबाई, के नाम मिलते हैं, जिन्होंने सैन्य-संचालन और युद्ध-कला में पुरुषों से बढ़कर योग्यता प्रदर्शित की। शासन प्रबन्ध में अहिल्याबाई अपने समय के अधिकांश शासकों के लिये आदर्श

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वरूप थी। विद्या और विज्ञान के विषय में आजकल अमरीका और योरोप में एक से बढ़कर एक विदुषी और वैज्ञानिक महिलायें हो रही हैं। स्वय बहाई-समाज का उदाहरण देते हुए श्री अब्दुलबहा ने एक ऐसी ही पूजनीय देवी का परिचय दिया था—

"हमारे समय की स्त्रियों में कुरातुलऐन है, जो एक मुल्ला की पुत्री थी। बाब के आविर्भाव के समय इसने ऐसा उत्साह और शक्ति दिखाई कि जो कोई भी इसका भाषण सुनता अत्यन्त विस्मित हो जाता था। अति प्राचीन काल से ईरान में पर्दा प्रथा रहते हुए भी इसने पर्दा छोड़ दिया। यद्यपि स्त्रियों का बाहरी पुरुषों से भाषण ईरानी समाज में रीति विरुद्ध समझा जाता था पर यह विदुषी ललना बड़े-बड़े विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ करती और सदैव विजय प्राप्त करती थी। बाबी होने के अपराध में इसे गिरफ्तार कर लिया गया, पत्थर फेंके गये, नास्तिक कहा गया, देश निकाले की धमकी दी गई, पर वह स्त्रियों को स्वाधीनता का अधिकार दिलाने के सिद्धान्त से कभी नहीं हिली। उसने ऐसी वीरता और उत्साह से अपने जीवन का बलिदान दिया कि देखने वाले चकित रह गये।"

श्री अब्दुलबहा ने इस बिषय पर भी प्रकाश डाला है कि अब जमाने के बदल जाने से स्त्रियों का उत्थान होना अनिवार्य है। वे कहते हैं—

"पिछले समय में संसार का शासन बल प्रयोग से होता था और पुरुष अपने शारीरिक तथा मानसिक बल की उन्नति और प्रबलता के कारण स्त्रियों को अपने आधीन रखता रहा। पर अब दाँव पलट रहा है। बल-प्रयोग के दिन बीतते जा रहे हैं और मानसिक स्फूर्ति, निपुणता, प्रेम, सेवा आध्यात्मिक गुण, जिनमें स्त्रियाँ अग्रसर हैं, विजय प्राप्त कर रहे हैं। इसलिये नये युग में पुरुष का हस्तक्षेप कम होगा और स्त्रियों के व्यवहार की अभिवृद्धि होगी। अथवा यों समझना चाहिये कि नया युग वह युग होगा, जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों संस्कृति के तराजू में एक समान तोले जायेंगे।"

स्त्रियों की स्थिति वर्तमान समय में निस्सन्देह बहुत शोचनीय है और

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वह मानव समाज की प्रगति में एक बड़े रोड़े की तरह सिद्ध हो रही है। संसार में आज जो अनेक कष्ट तथा दोष दिखलाई पड़ते हैं, स्त्रियों की यह गिरी हुई दशा भी उनका एक बड़ा कारण है। हमारे अधिकांश देशवासी तो अभी इस तरफ से आँखें ही बन्द किये हुए हैं और लाखों पढ़े-लिखे ऐसे हैं जो घर के कामों के सिवा और किसी काम में हाथ लगाना स्त्रियों के लिये अनधिकार चेष्टा मानते हैं। ऐसी दशा में बहाई-समाज के संस्थापकों का स्त्रियों के लिये पुरुषों के समान अधिकारों की घोषणा और उनका यथाशक्ति प्रचार वास्तव में प्रशंसनीय है और जब हम यह विचार करते हैं कि उन्होंने यह कार्य किस समाज में और किस जमाने में किया था, तब उनकी दूरदर्शिता के सम्मुख हमको नत मस्तक होना पड़ता है।

शिक्षा का महत्व

बहाई नेताओं ने शिक्षा की ओर भी पूरा ध्यान दिया है और प्रत्येक बालक को आरम्भ से उपयोगी ज्ञान प्राप्त करने के साधन उपलब्ध कराये जायें इस पर बहुत जोर दिया है। महात्मा बहा के उन आदेशों में से एक इस प्रकार है—

"आज्ञा है कि प्रत्येक पिता अपने पुत्र और पुत्रियों को लिखने-पढ़ने की शिक्षा दे। जो मनुष्य इस आज्ञा की उपेक्षा करता हो तो न्याय मन्दिर को चाहिये कि यदि वह मनुष्य धनी है तो उससे उतना धन ग्रहण करले जितना उसके बच्चों की पढ़ाई के लिये पर्याप्त हो और यदि वह निर्धन है तो उसके बच्चों की शिक्षा का भार न्याय मन्दिर के ऊपर है। निःसंदेह हमने न्याय मन्दिर को निर्धनों एवं दरिद्रों का शरणालय बनाया है।"

"मनुष्य के लिये ज्ञान पङ्ख हैं या कहीं चढ़ने के लिये सीढ़ी के समान हैं। विद्या प्राप्त करना अत्यावश्यक है, परन्तु ऐसी विद्या या विज्ञान प्राप्त करना चाहिये जिससे संसार का उपकार हो सके। ऐसा विज्ञान जो शब्दों से आरम्भ हो और केवल शब्दों पर ही समाप्त हो जाय, न सिखाना चाहिये। संसार भर के लोगों पर कला-कौशल और विज्ञान जानने वालों का बड़ा अधिकार होता

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। वास्तव में मनुष्य की सच्ची सम्पत्ति उसका ज्ञान है। ज्ञान से ही मनुष्य सम्मान, सफलता, सम्पत्ति, हर्ष, आनन्द, सुख और उन्नति प्राप्त करता है।"

सब धर्मों की एकता

बहाई सिद्धान्तों में विश्व-शान्ति के महत्त्व पर बहुत जोर दिया गया है और सब मनुष्य प्रेम और एकता से रहें यही ईश्वर का मुख्य अभिप्राय बतलाया गया है। यद्यपि आज अवस्था बहुत बदल गई है और धर्म का स्थान धन ने ले लिया है, पर जिस समय महात्मा बहा ने अपना प्रचार कार्य किया था उस समय विभिन्न जातियों के सङ्घर्ष अधिकांश में धर्म के नाम पर होते थे। इसलिये उन्होंने लोगों को धर्म के सच्चे स्वरूप को समझने की प्रेरणा की जिससे मनुष्य अपने वास्तविक कर्तव्य को समझकर उसका पालन कर सके। उनके सिद्धान्तों की व्याख्या करते हुए श्री अब्दुलबहा ने कहा था—

'धर्म का काम तो यह है कि वह हृदयों को मिलाए और लड़ाई झगड़ों को संसार से दूर करे। धर्म के द्वारा आध्यात्मिक भावों का उदय होना चाहिये और प्रत्येक अन्तरात्मा को प्रकाश और जीवन प्राप्त होना चाहिये। यदि धर्म ही बैर घृणा और भेद भाव का कारण बनता है तो अच्छा है धर्म न हो और ऐसे धर्म से परे रहना ही सच्चा धर्म है। क्योंकि यह एक सीधी बात है कि औषधि का काम व्यथा को दूर करना है पर यदि औषध से रोगवृद्धि होने लगे तो उस औषध को छोड़ देना ही अच्छा है। जो धर्म प्रेम और एकता का उत्पादक नहीं वह धर्म ही नहीं है।"

महात्मा बहा ने धर्म के सम्बन्ध में जो कुछ उपदेश दिया है उसमें कोई ऐसी बात नहीं जिससे किसी भी देश या समाज की बुराई हो या मनुष्यों के बीच द्वेष, घृणा आदि की वृद्धि हो। उन्होंने सदा सब मनुष्यों की एकता पर बल दिया और धर्म के नाम पर उन्हीं बातों की नसीहत दी जिससे किसी का उपकार हो सके।

जाति या राष्ट्र सम्बन्धी भेद-भाव

युद्धों और सङ्घर्षों का दूसरा बड़ा कारण जाति अथवा राष्ट्र सम्बन्धी

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भेद भाव भी है। अनेक व्यक्ति इसको एक बहुत ऊँचा गुण और गौरव का विषय मानते आये हैं। कुछ समय पहले जब तक संसार में आवागमन के साधन कम थे और अधिकांश मनुष्य अपने देश की सीमाओं में ही बंधे रहते थे, इस भावना को किसी हद तक आवश्यक माना जा सकता था, क्योंकि उससे आत्म-रक्षा में सहायता मिलती थी। पर आज जबकि समस्त पृथ्वी एक देश से भी छोटी हो गई है, मनुष्य चौबीस घण्टे के भीतर दुनियाँ के आर-पार पहुँच सकता है, तब जाति और राष्ट्र के नाम पर दूसरों को चुनौती देना और इसको युद्ध का कारण बनाना नासमझी या मिथ्या अहङ्कार ही है। बहाई सिद्धान्तों में इसका निराकरण भी स्पष्ट रूप से कर दिया गया है—

"जातीय पक्षपात—राष्ट्रीयता का दुराग्रह केवल धोखा और स्पष्ट भ्रम है, क्योंकि ईश्वर ने हम सबको एक ही जाति (मनुष्य) में पैदा किया है। आरंभ में भिन्न-भिन्न भू प्रदेशों की न कोई परिधि थी और न कोई हदबन्दी थी। कोई जाति किसी भू-प्रदेश की विशेष स्वामिनी न थी। ईश्वर की दृष्टि में विविध जातियों में कोई भेद भाव नहीं है। फिर मनुष्य ऐसे दुराग्रह के शिकार क्यों बनते हैं? ईश्वर ने मनुष्यों को इसलिये पैदा नहीं किया कि वह एक दूसरे का विनाश करते रहें। प्रत्येक जाति, वंश, सम्प्रदाय परम पिता के प्रसाद में एक-सा भाग प्राप्त करते हैं।"

विश्व-भाषा की आवश्यकता

संसार में से भेद-भाव को मिटाकर एकता स्थापन करने का एक बड़ा साधन सामान्य भाषा का प्रचार भी है। इसके सम्बन्ध में महात्मा बहा ने बहाई धर्मग्रन्थ (अकदस) में लिखा है—

"एकता ही से संसार में ईश्वरीय धर्म का प्रकाश सदा फैलता आया है और एकता का सबसे बड़ा साधन यह है कि लोग एक-दूसरे की बात-चीत या पढ़ने-लिखने को समझें। विश्व-न्यायालय के अधिकारियों को चाहिये कि वे या तो वर्तमान भाषाओं में से किसी एक को स्वीकार करलें या किसी नवीन भाषा की रचना करें। इसी प्रकार किसी एक लिपि को भी विश्व भर में प्रचलित

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर लें और संसार भर की पाठशालाओं में बच्चों को इसी भाषा और इसी लिपि में शिक्षा दें जिससे संसार एक देश और एक परिवार बन सके।"

× × ×

महात्मा बहा की शिक्षाओं ने संसार के सभी मानवता में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों और विशेषतः बहाई समाज के सदस्यों पर इतना प्रभाव डाला कि वे वास्तव में पूरब और पश्चिम, योरोप और एशिया, ईसाई-मुसलमान-बौद्ध-आदि जैसे भेदों से ऊपर उठकर एक विश्व-राज्य या मानव-समाज की संभावना में पूरा विश्वास करने लग गये। श्री अब्दुलबहा ने महात्मा बहा की भविष्यवाणियों की व्याख्या करते हुए स्पष्ट शब्दों में बतलाया—

"इस अद्भुत युग में संसार सारा बदल जायगा और मानव-जाति शांति और सौन्दर्य से विभूषित होगी। विरोध, झगड़ों और हत्याओं के स्थान में प्रेम, सचाई और मेल-मिलाप की स्थापना होगी। सब समाजों, सब लोगों और सब देशों में स्नेह और एकता का उदय होगा। सहकारिता और सहयोग स्थापित होगा और युद्धों का सर्वथा अन्त हो जायगा। सबल और दुर्बल, धनी और निर्धन, विरोधी दल और बैर रखने वाली जातियाँ, जो आज भेड़ और भेड़िये की तरह बनी हुई हैं, परस्पर पूर्ण प्रेम, मैत्री, न्याय और धर्मयुक्त व्यवहार करेंगी।"

नये युग का यह चित्र किस सत्य-प्रेमी और ईश्वर में निष्ठा रखने वाले मानव के हृदय को प्रफुल्लित नहीं करेगा! चाहे कभी मानव-जाति को इसे प्राप्त करने के लिये एक अन्तिम कसौटी पर कसा जाय—उसे रक्त-सागर को तैरकर पार करना पड़े, पर पवित्रात्मा बहा द्वारा प्रदर्शित यह 'स्वर्ण-युग' अब हमारे निकट आ पहुँचा है, इस पर हमको पूर्ण विश्वास है। हमारा यह भी कर्तव्य है कि इस 'युग-निर्माण' के दैवी काल में हम से जितना भी बन पड़े संसार को दोष और कुरीतियों से छुड़ाने और समयानुकूल कल्याणकारी रीति-नीतियों का प्रचलन करने में पूरा-पूरा सहयोग दें।

मुद्रक—वृन्दावन शर्मा 'जनजागरण प्रेस' मथुरा।